REET 2025

LEVEL-2

वंदन बैच

राज इतिहास एवं कला संस्कृति

मारवाड़ का राठौड़ राजवंश

Part -2

LIVE 04-02-2025 08:00 PM

महाराणा प्रताप

राव चन्द्रसेन → 1562-84

उपनाम

- मारवाड़ का प्रताप
- भूला बिसरा राजा
- महाराणा प्रताप का पथ प्रदर्शक
- महाराणा प्रताप का अग्रगामी
- मारवाड़ का प्रताप
- दा फॉरगॉटन हिरो ऑफ राजस्थान

सभी राजपूत शासकों का आदर्श शासक

जन्म → 1541

माता → स्वरूप दे

पिता → मालदेव

भाई → उदयसिंह | राम सिंह

अकबर के रत्न से

→ मारवाड़ का पहला और अन्तिम शासक राव चन्द्रसेन था
जिसने मुगलों की अधिनता स्वीकार नहीं की
→ लोहावट का युद्ध → इस युद्ध अपने भाई उदय सिंह को हराया
→ राव चन्द्रसेन के भाई उदयसिंह | रामसिंह अकबर के दरबार
→ अकबर ने 1584 में हुसैनकुली खाँ को जोधपुर पर आक्रमण के
लिए भेजा
→ राव चन्द्रसेन ने जोधपुर छोड़कर भाद्राजुन चले गये

मुगलों की अधिनता स्वीकार करने वाले शासक

- मारवाड़ → मोटा राजा उदयसिंह
- आमेर → भारमल (राजस्थान का पहला शासक)
- बुन्दी | रणथम्भौर → सुर्जनहाड़ा
- बीकानेर → कल्याणमल
  - रायसिंह
  - पृथ्वीराज राठौड़
- जैसलमेर → हरराय भारी

मुगल शासक अकबर

ने 1570 में नागौर दरबार लगाया

अकबर — नागौर
- शुक्र तालाब
- अकबरी मस्जिद

अकबर ने चन्द्रसेन के खिलाफ BKNR के राय सिंह को भेजा।

कुमपा

↓

1562 → जोधपुर
1564 → सिवाणा

> दुर्गों का प्रशासक → राय सिंह को बनाया

- राव चन्द्रसेन जोधपुर के बाद सिवाना में शरण ली उसके बाद जगली और पहाड़ो में छापामार पद्धती का प्रयोग कर संघर्ष किया
  - → राव चन्द्रसेन सारण की पहाड़ीया, कणुजो की पहाड़ीया, भाद्राजून, सिवाना की पहाड़ीयो में रहकर संघर्ष किया
  - → राव चन्द्रसेन ने जैसलमेर के हरराय भाटी के पास पोकरण दुर्ग गिरवी रखा

→ शव-च-ईसन ने जैसलमेर के हरराय भाटी के पास पौकरण दुर्ग गिरवी रखा

→ शव चन्द्रसेन की मृत्यु 11 Jan 1581 को बैरसल नामक व्यक्ती ने जहर सन्धियाप नामक स्थान पर दिया

छत्री → सारण - पाली

मोटा राजा उदयसिंह :

↳ मुगलों की अधिनता स्वीकार करने वाला शासक

↳ " से वैवाहिक संबंध स्थापित करने वाला

↳ मारवाड़ चित्रकला पर मुगल प्रभाव

↳ मोटा राजा की उपाधि : उदयसिंह को मुगल शासक अकबर ने दी

नोट → 1584 में राव चन्द्रसेन की मृत्यु के बाद जोधपुर की भूमि को मुगल शासक अकबर ने खालसा भूमि घोषित किया।

मोटा राजा उदय सिंह ने मुगल शासक अकबर के पुत्र जहांगीर से अपनी पुत्री मानमती, मानी बाई | जगत गोसाई | जोधाबाई से किया

→ जोधपुर की राजकुमारी होने के कारण जोधा बाई कहा जाता है

→ मानमती मानी बाई जगत गोसाई + जहांगीर से उत्पन्न

नोट: राजपूत शासको की पुत्री से उत्पन्न सन्तान जिनका विवाह मुगलो से हुआ और जो मुगल बादशाह बने

मारवाड़ → उदयसिंह ने जहांगीर से जगतगोंसाई का

पुत्र → खुर्रम | शाहजहा

जयपुर | आंमेर → भारमल ने अकबर के साथ - हरखा | शाही बाई का विवा

पुत्र → सलीम - जहांगीर

शुरसिंह → को सवाई की उपाधि लाहौर में
मुगल शासक अकबर ने दी

→ अकबर और जहांगीर की सेवा में रहा

गजसिंह :

मुगल शासक जहांगीर ने गजसिंह को बिजापुर और गोलकुण्डा अभियान के बाद दल थमन की उपाधि दी

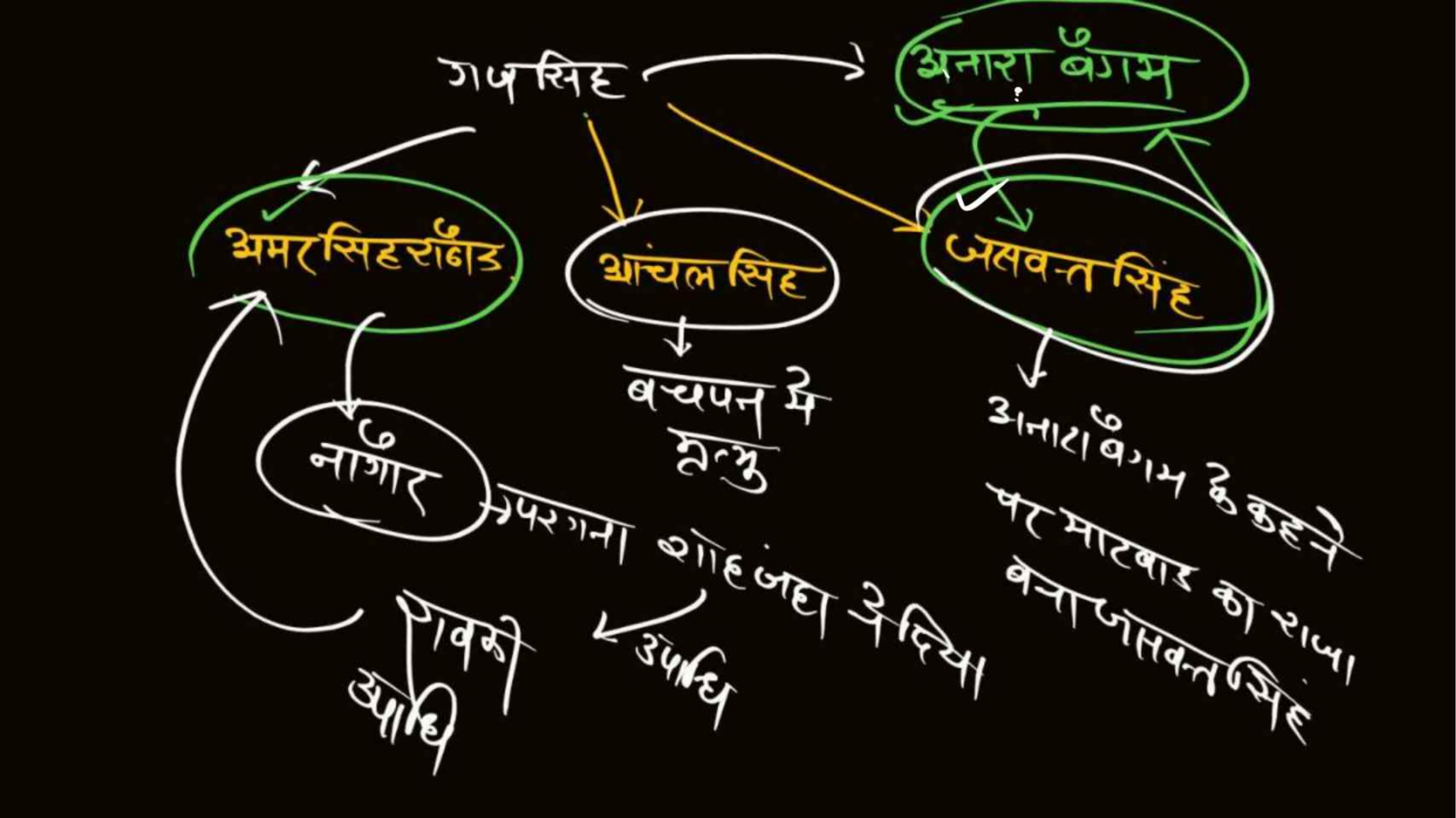
गजसिंह
अनारा बेगम
अमरसिंहराठौड
आंचलसिंह
जसवन्तसिंह
नागौर
बचपन में मृत्यु
अनारा बेगम के कहने पर मारवाड़ का राज्य जसवन्तसिंह
परगना शाहजहां ने दिया
खावरी उपाधि
उपाधि

५ महाराजा जसवन्त सिंह → 1638-78

महाराजा की उपाधि → शाहजहां ने दी → जसवन्त सिंह को

पहली बार राज्याभिषेक → आगरा (12 वर्ष)

जोधपुर में राज्याभिषेक - 15 वर्ष

→ राजा बने → 4000 जात 4000 सवार (8000) मनसबदार थे

→ मृत्यु के समय → 7000 का मनसब

→ राजसिंह कुम्भावत की छतरी → कागा औधपुर

→ धरमत का युद्ध → 1658 :→ औरंगजेब व दाराशिकोह के मध्य
↳ जीत → औरंगजेब

मारवाड़ राजा जसवन्त सिंह दाराशिकोह का साथ दिया

→ विश्वासघात → कासिम खाँ ने दाराशिकोह के साथ किया

→ मारवाड़ | औधपुर में जसवन्तसिंह की पत्नी जसवन्त दे ने
औधपुर दुर्ग के दरवाजे बन्द किये

दौराई का युद्ध → 1659 : अजमेर

↳ इस युद्ध में औरंगजेब ने दारा शिकोह को हराकर तारागढ अजमेर में बन्द रखा बाद में हत्या करवा दी

जसवन्त सिंह की पुस्तकें : आनन्द विलास ✓
भाषा भूषण ✓
गीता महातम्य ✓
प्रबोध चन्द्रोदय ✓
परोक्ष ज्ञान ✓
सिद्धान्तसार ✓
नीति का भेद ✓

most

जसवन्त सिंह की मृत्यु → 1678 में जमरूद अफगानिस्तान में मृत्यु

औरंगजेब जसवन्तसिंह की मृत्यु पर कहा → आज कुफ्र का दरवाजा टूट चुका है

→ 1678 जोधपुर की भूमि को खालसा घोषित कर अमरसिंह राठौड के पोते इन्द्र सिंह को प्रशासक बनाया।

→ मुहणोत नैणसी → ओसवाल परिवार) (अपवाद)

↳ राजपूताने का अबुल फजल → मुरारीदेवी प्रसाद ने कहा

राजस्थानी भाषा साहित्य

- ✓ मुहणोत नैणसी री ख्यात
- मारवाड़ रा परगना री विगत

✓ सर्व संग्रह

राजपूताने का गजेटियर

कहा जाता है

राज. के इतिहास के क्रमबद्ध का प्रथम मुहणोत नैणसी

दुर्गादास राठौड़ :

जन्म → 1633 सालवा गांव

पिता → आसकरण

माता → नेतकंवर

जागीर → लुणवा

उपनाम

मारवाड़ का उद्धारक

मारवाड़ का चाणक्य

राठौड़ो का युलिसेस (कर्नलरॉड)

अगबिदीयो मॉनी

राजपुताने का गैरीबाल्डी

वीर शिरोमणी श्री दुर्गादास जी राठौड़

दुर्गादास राठौड़
आसकरण
पत्नी
नेतकंवर
जसवन्त सिंह
रत्ना राणी
पुत्र
जोधपुर
अजीत सिंह

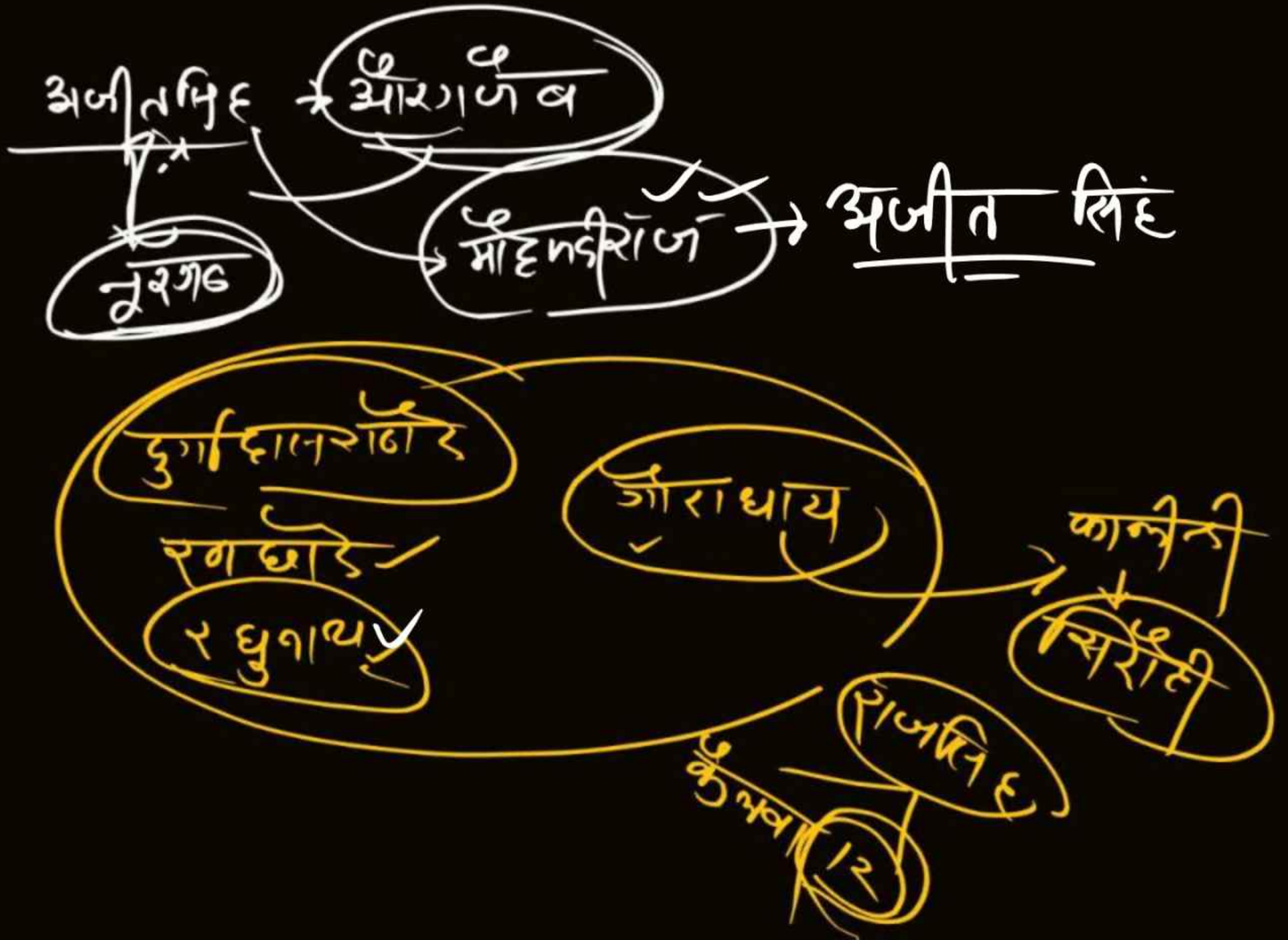
अजीतसिंह
औरंगजेब
मोहनदासीराजा
अजीत सिंह
नूरगढ
दुर्गादासराठौड
रणछोड
रघुनाथ
गोराधाय
कालीली
सिरोही
राजसिंह
कुंभलगढ

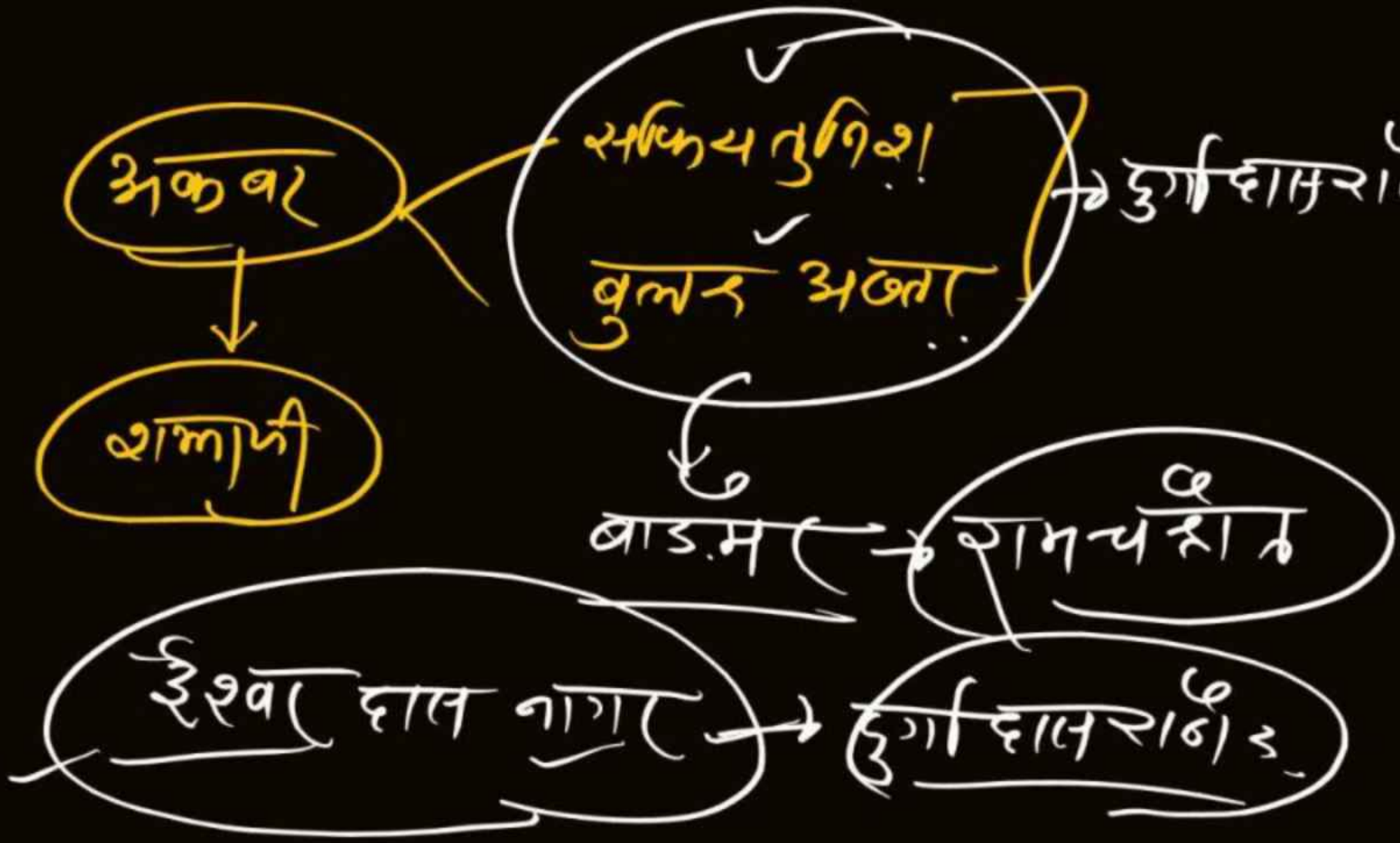
अकबर
शक्तसिंह
सक्तसिंह
बुलन्द अख्तर
दुर्गादास राठौड़
बाड़मेर
रामचन्द्रौत
ईश्वर दास नागर
दुर्गादास राठौड़

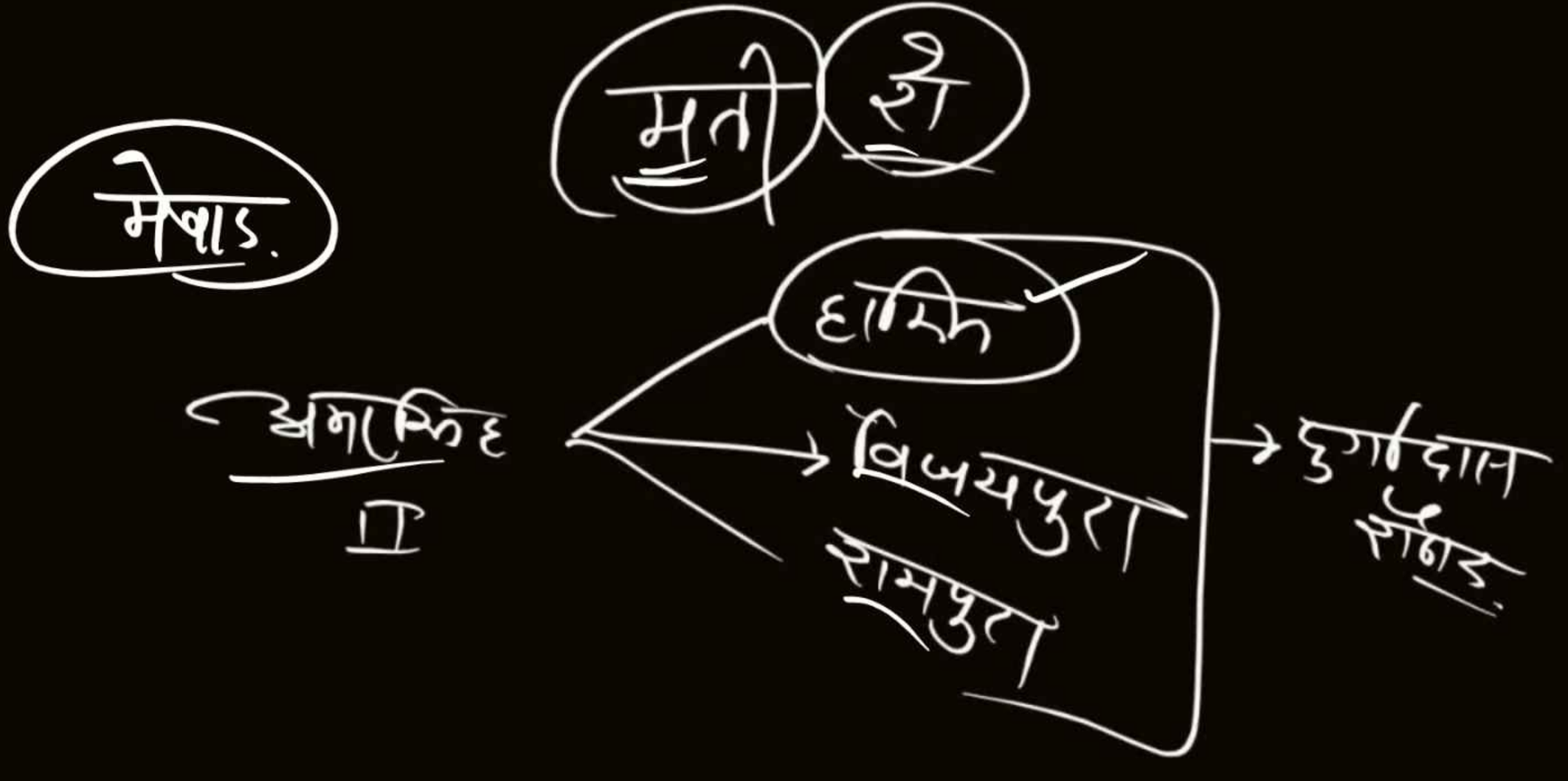
मेवाड़
मुगल
शेर
हल्दि
अकबर
विजयपुरा
रामपुरा
दुर्गादास
राठौड़

दुर्गादास राठौड + अजीत सिंह

→ अजीत सिंह का जन्म 1679 में लाहौर में हुआ

→ औरंगजेब ने अजीत सिंह को दिल्ली के नूरगढ महल में नजरबंद रखा

→ दुर्गादास राठौड, आराधाय, मुकुन्ददास, रघुनाथ भाटी के सहयोग से अजीत सिंह को दिल्ली के नूरगढ महल से निकालकर कालिन्दी सिरोही में जयदेव ब्राह्मण के घर रखा गया

→ मेवाड महाराणा राज सिंह ने दुर्गादास राठौड के कहने पर रानेरी तथा कैलवा जागीर और 12 गांव दिये

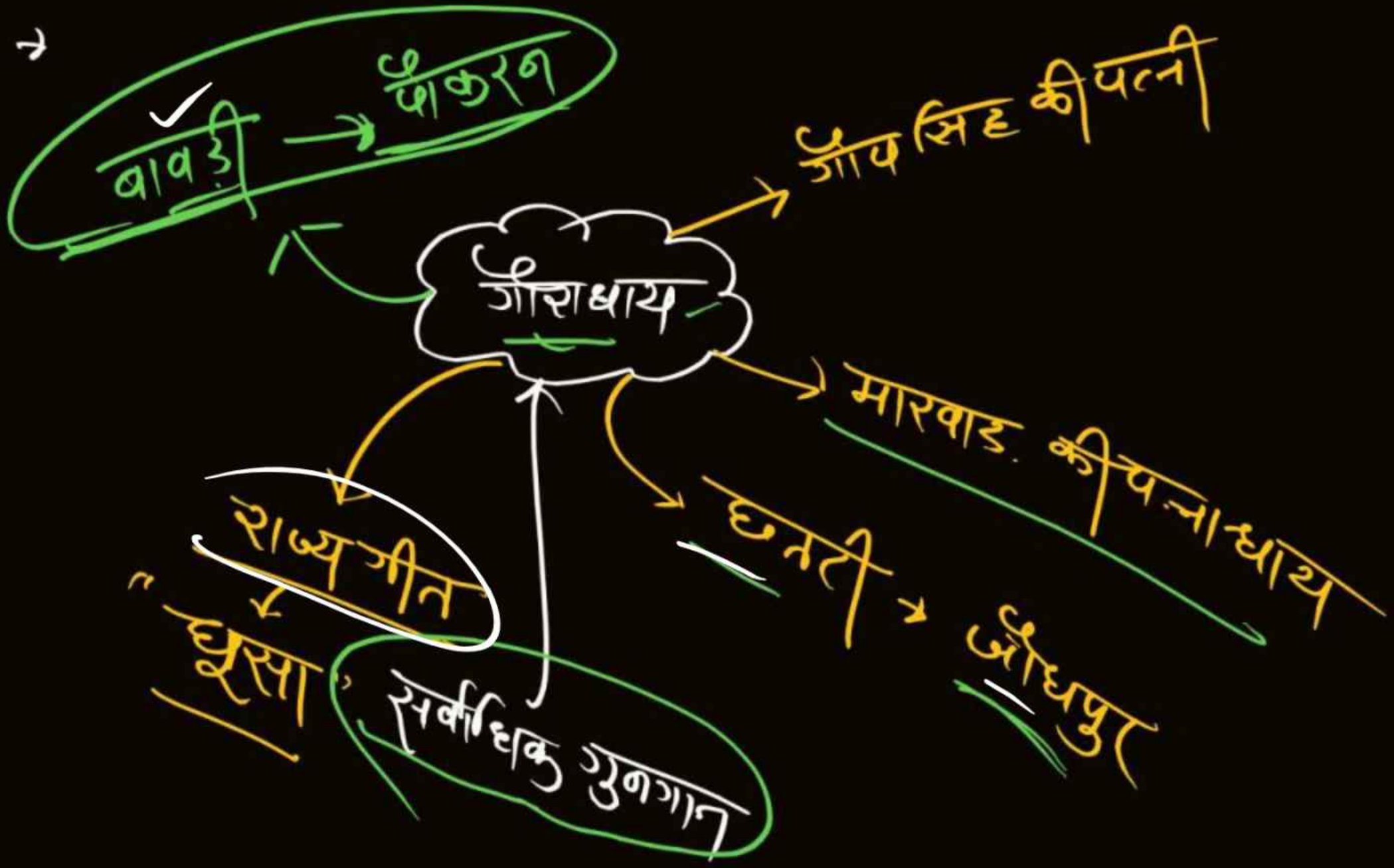
बावड़ी → फैंकरण
जीराधाय
गाँव सिंह की पत्नी
मारवाड़ की पन्नाधाय
छतरी → औंधपुर
राज्यगीत
"घूसा"
सर्वाधिक गुणगान

→ 1687 → दुर्गादासराठौड़ के सम्मान में पालड़ी गांव (सिरोही) सार्वजनिक किया गया

→ दुर्गादासराठौड़ ने औरंगजेब के पुत्र अकबर II की सन्तान सफियतुनिशा और बुलन्द अख्तर को अपने पास रखा

→ कुरान की शिक्षा → बाड़मेर

देखरेख की जिम्मेदारी → रामचन्द्रान

→ फुतुहात-ए-आलमगिरी → ईश्वरदास नागर की पुस्तक

→ ईश्वरदास नागर के बहने पर औरंगजेब के पांव और पानी की दुर्गादासराठौड़ ने औरंगजेब को सौंपा

औरंगजेब ने दुर्गादास राठौड़ को 3000 जात 2000 सवार मनसब दिया
उतारन, मड़ता पौकरण की जागीर दी

→ औरंगजेब ने अजीत सिंह आँचार जालौर की जागीर दी

→ 1707 में दुर्गादास राठौड़ के सहयोग से अजीत सिंह ने
जफर कुली खाँ को पराजित कर जोधपुर पर अधिकार किया

→ दुर्गादास राठौड़ मेवाड़ अमर सिंह II के पास चले गये

↳ मेवाड़ < वि जयपुरा
राम पुरा की जागीर

पद → "हाकीम"

दुर्गादास राठौड़ की मृत्यु → उज्जैन → क्षिप्रा नदी के किनारे

छतरी → उज्जैन

→ दुर्गादास राठौड़ का स्मारक → मलुरिया की पहाड़ी पर (जोधपुर

नोट → रामदेवजी का मन्दिर और रामदेवजी के गुरु बालीनाथ की गुफा मलुरिया की पहाड़ी पर है।

मारवाड़ शैल्य का इतिहास → G.H. ओझा

↓

दूसरा खण्ड → दुर्गादास राठौड़ का वर्णन है।

रत्ना रासौ ग्रन्थ → कुमकरण सान्डू

↓

दुर्गादास राठौड़ के धरमत युद्ध की वीरता का वर्णन है।

अजीत सिंह :

↳ गौरीशंकर हिराचन्द ओझा ने इसे कान का कच्चा कहा

↳ अजीत सिंह ने जसवन्त सिंह का स्मारक बनवाया

→ घनश्याम मन्दिर का निर्माण करवाया

→ अजीत ने अपनी एक पुत्री इन्द्र कवर का विवाह मुगल शासक फरुर्खसीयर के साथ किया

→ मारवाड़ का दुसरा पितृहन्ता राजा → बख्त सिंह
↓ हत्या → अजीत सिंह

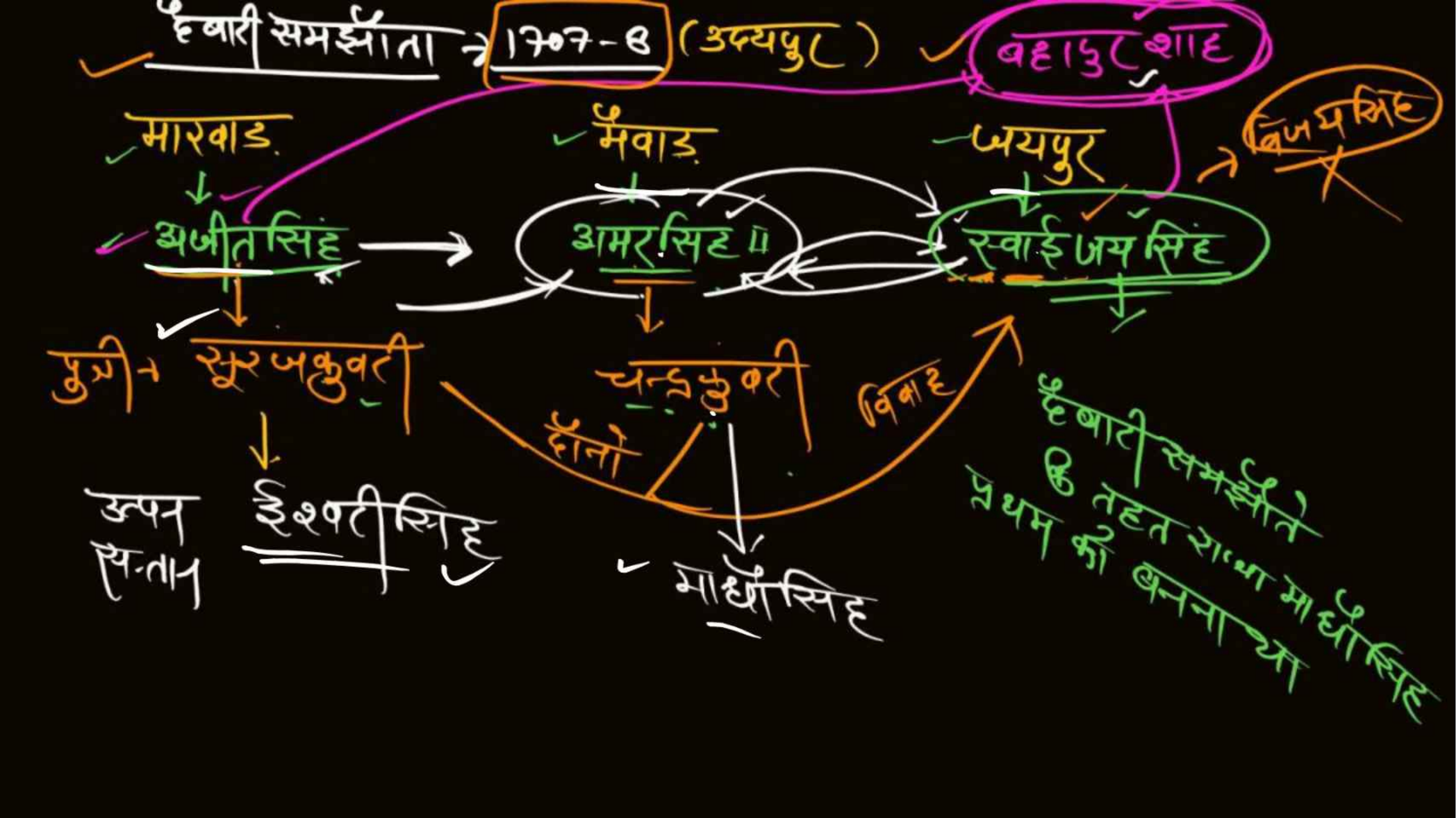
ईबारी समझौता → 1707-8 (उदयपुर)
बहादुर शाह
मारवाड़
मेवाड़
जयपुर
विजय सिंह
अजीत सिंह
अमर सिंह II
स्वाई जय सिंह
मुगल
सूरजकुंवरी
चन्द्रकुंवरी
दोनों
विवाह
उपर
इश्वरी सिंह
माधो सिंह
ईबारी समझौते
के तहत राधा माधो सिंह
प्रथम को बनना था

अजीत सिंह की रचना

↓

- अजीत सिंह चरित
- गुण सागर
- निर्मल दुहा
- डुंगरसिंह भाषा

अजीतोदय भरत

↓

रचना

↓

अगजीवन भरत

अभयसिंह → 1730

↓

खेजड़ली आंदोलन → 1730 → भाद्रपद शुक्ल दसमी

↓

अभय सिंह के कहने पर जालीयानाडा, गुढ़ा बिश्नोई ग्राम। खेजड़ली ग्राम में गिरधर दास भण्डारी ने वृक्ष कटवाये

→ वृक्षों को बचाने के लिए अमृता देवी बिश्नोई तथा इनके पति रामो जी बिश्नोई सहित 363 स्त्री पुरुष ने प्राणों की आहुती दी

अभय सिंह का गुजरात अभियान

↓

वर्णन

- शेखरूपक ग्रन्थ में वीर भाव से किया
- → अभयसिंह के चारण कवि करणीदान ने सूरजप्रकाश ग्रन्थ लिखा
- → हुरड़ा सम्मेलन → 17 जुलाई 1734 → को मारवाड़ की तरफ से अभय सिंह ने भाग लिया

विजयसिंह

↓

इसकी पालवान → गुलाब राय

कवि राजा श्यामल दास ने गुलाब राय को औधपुर की नूरजहां

तथा जहांगीर का नमुना विजय सिंह को कहा

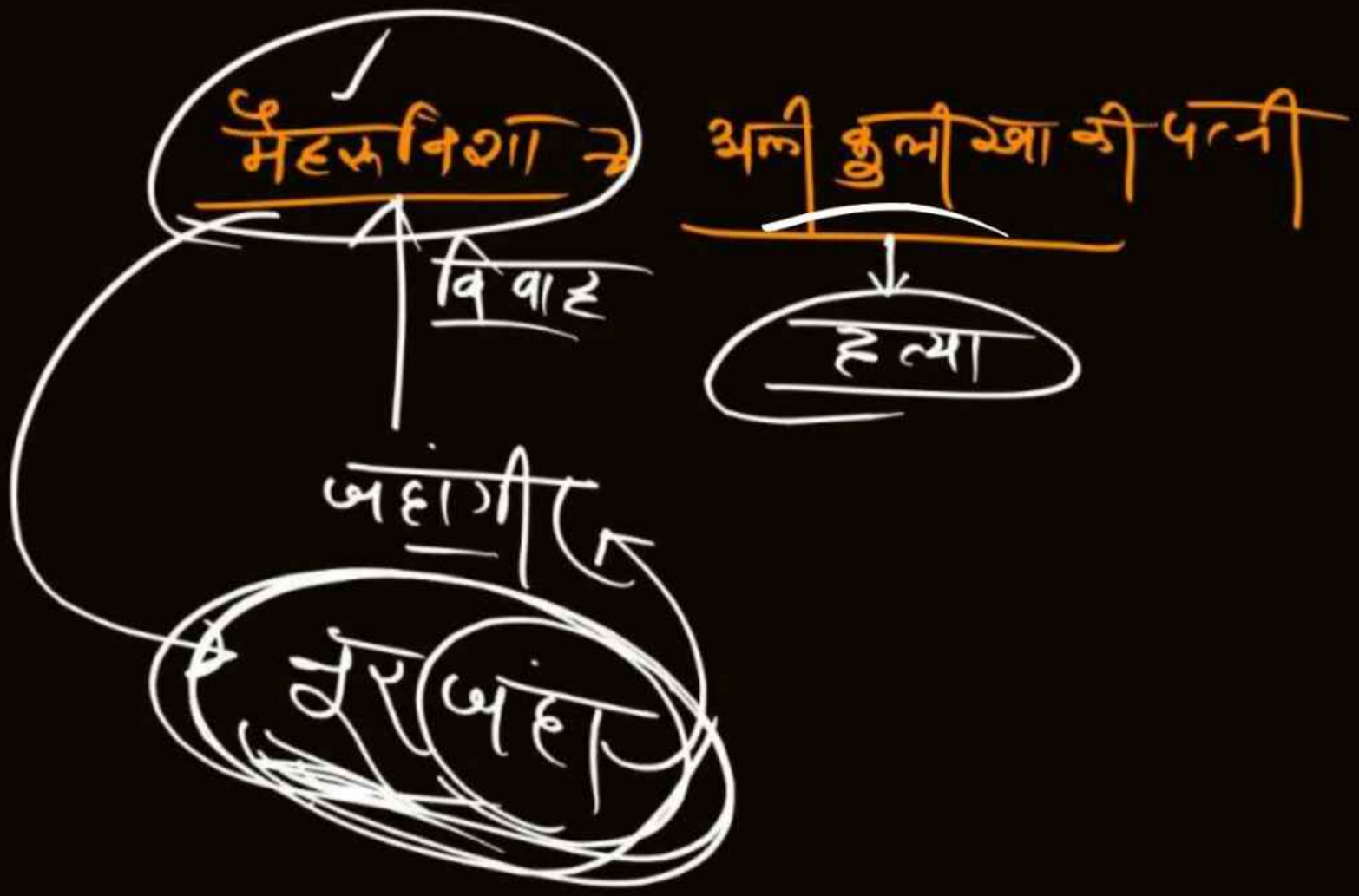
मैहसविशा
अली कुलीखा की पत्नी
विवाह
हत्या
जहांगीर
नूरजहां

सिक्के →

↳ सिक्कों के अध्ययन को न्युमिस मैटिस्स | मुद्राशास्त्र

→ विजयशाही → जोधपुर
→ गुमानशाही → कोटा
→ मदनशाही → करौली | झालावाड़
→ झाड़शाही → जयपुर
→ तमन्याशाही → धौलपुर
→ स्वरूपशाही → मेवाड़
→ गजशाही → बीकानेर

शालिम शाही → डूंगरपुर
बांसवाड़ा
प्रतापगढ़

डेबुशाही → सिरोही

गधीया | फदीया → मकड़ी
लल्लुलिया | गुर्जा | प्रतिहार सिक्के

औरंगजेबशाही → अलवर
जोधपुर

कृष्णाकुमारी विवाह :→ 1803-1810 तक → कब हुआ → 1807

नोट → 1810 में अमीरखा पिंडारी और अजीत सिंह चुण्डावत के कहने पर राणा भीमसिंह ने अपनी बेटी कृष्णाकुमारी को जहर देकर विवाद समाप्त किया

राजा मान सिंह → 1818

↳ देव आयसनाथ की भविष्यवाणी : अगर मान सिंह जालौर दुर्ग में रुकता है तो मारवाड़ का राजा मान सिंह बनेगा

→ 1803 में मान सिंह मारवाड़ का राजा बना

→ इसे सन्यासी राजा भी कहा जाता है

→ मान सिंह ने अपने गुरु देव आयसनाथ के नाम का मंडोर में भव्य मंदिर बनवाया जो नाथ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है

→ मान सिंह ने मानपुस्तकालय बनवाया

→ दरबारी विद्वान → बांकीदास → "आयो राज अंगेजा रो मुल्कां रे ऊपर"

→ 1818 में मान सिंह ने अंग्रेजों के साथ संधि की

→ **महाराजा तख्त सिंह : 1857**

↳ 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों का साथ देने वाला शासक

↳ लार्ड मैयो कॉलेज के लिए आर्थिक सहयोग किया

↳ क्रान्तिकारी दुर्गा जी की रात्रा प्रदान की

→ सरदार सिंह → पोलो का खिलाड़ी था

→ जोधपुर दुर्ग की तलहटी में जसवन्त थड़ा बनवाया जिसे राजस्थान का ताजमहल कहा जाता है

→ जसवन्त सिंह II के समय स्वामी दयानन्द सरस्वती का आगमन हुआ।

जसवन्तसिंह की पालवान नन्ही जान नन्ही भगतन ने 1883 को दयानन्द सरस्वती को इंच से कांच घोलकर पीला दिया

स्वामी दयानन्द सरस्वती की मृत्यु → पुल्कर अजमेर

दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ →

↓

सत्यार्थ प्रकाश

पाखण्ड खण्डन

वल्लभाचार्य चिन्तन

ऋग्वेद भाष्य

ऋग्वेद भाष्य

दयानन्द सरस्वती पहली बार → करौली आये मदनपाल के आग्रह पर

दूसरी बार → उदयपुर (सज्जनसिंह)

तीसरी बार → जोधपुर

जयपुर 3 बार गये

हनुवन्त सिंह :- रा.प्र. के स्वीकरण के समय मारवाड़ का राजा था

↳ स्वीकरण के पाँचवे चरण मे जोधपुर का विलय हुआ।

गज सिंह II :- पानी बंधाओ बिजली बंधाओ आंदोलन करने वाला राजा

↳ रामेश्वरा पैदल आने वाला शासक